डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए. ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

विमर्श

रामायण : आधुनिक विमर्श-७

रानी कैकेयी

संसार की सभी माताएँ अपने बच्चों के लिये जीतीं हैं और उन्हें जी-जान से चाहती हैं। अपने बच्चों से ही उनके जीवन में आनन्द भरता है, यही संसार की रीति है। बच्चे भी माँ को आदर करते हैं और उसको अपना सबसे सच्चा दोस्त समझते हैं। माँ ही बच्चों का सबसे बड़ा सहारा होती है। जिन्दगी में कभी-कभी बच्चे माँ को समझने में भूल करते हैं और उसकी बेइज़्ज़ती भी करते हैं। इसे बर्दाश्त करने के अलावा माँ के पास दूसरा कोई चारा नहीं होता। यह है माँ का दुर्भाग्य। ऐसी बद्किस्मती कैसे आती है उसका एक नमूना है कैकेयी चरित्र। हम कहेंगे यह हैं हमारी रानी कैकेयी!

वाल्मीकि रामायण के खलचरित्रों में कैकेयी शामिल है। कैकेयी नहीं होती तो रामायण की कहानी बदल जाती। जब राक्षस विराध सीताजी को अपने कन्धे में बिठाकर भागता है, तो राम जी उसका पीछा करने के बदले कैकेयी को स्मरण करके गालियाँ देते हैं। कैकेयी को वह अपनी माता समझते हैं, लेकिन उसे धिक्कारने से खुद को रोक नहीं पाते। उनको मालूम है कि कैकेयी की चाल ने उनको वन भिजवाया है। वे विराध से सीता के अपहरण को अपना सर्वनाश समझते हैं। उनका क्रोध कैकेयी पर जाता है। ऐसी ही गालियाँ दूसरों ने कैकेयी को दी हैं और कैकेयी यह सब सहती है। बच्चों की भलाई माँ देखती है, लेकिन दुनिया माँ को समझती नहीं है।

कैकेयी बड़े घराने की है। कैकेय राज्य घोड़ों के लिये प्रसिद्ध था। कैकेयी का भी घोड़ों से लगाव था। घोड़े पर सवार होकर शिकार के लिये जंगल में जाना या अस्त्र संचालन में भी कैकेयी की निपुणता थी। वह सुन्दर भी बहुत थी। राजा दशरथ कहीं बहुत दूर से उसे ढूंढकर इस इच्छा से लाये थे कि उससे उन्हें संतान होगी। कौशल्या और सुमित्रा पहले से थी लेकिन उनसे पुत्र जन्म नहीं हुआ। पुत्र की खोज में राजा कैकेय राज्य में पहुँच गये। शायद कैकेयी उम्र में छोटी थी तो राजा दशरथ ने अपने ससुर को वचन दिया कि कैकेयी के गर्भ से उनका पुत्र अयोध्या का राजा बनेगा। कैकेयी दुल्हन बनकर अयोध्या में आई लेकिन उसको पुत्र पैदा नहीं हुआ। सन्तान प्राप्ति की योजना काम में नहीं आयी।

राजा दशरथ के निवास अयोध्या नगरी में कौशल्या और सुमित्रा का महल एक तरफ था और कैकेयी का दूसरी तरफ। वहाँ बगीचा था, मूर्तियां थीं, चिड़ियां थीं, सोने का पलंग था। कैकेयी श्रृंगार में रहती थी और राजा दशरथ हमेशा वहीं रात बिताते थे। तीनों रानियों में अगर राजा ज्यादा समय कैकेयी के साथ बिताते हैं

तो इससे उसको घमण्ड आना स्वाभाविक है। इस प्रकार कैकेयी घमण्डी थी और राजा से अन्तरंग होने से उसका घमण्ड कुछ ज्यादा बढ़ गया था। कौशल्या को वह काफी डाँटती थी। कौशल्या राजा की पहली रानी थी। कौशल्या की जप-पूजा राजा को पसन्द थे। लेकिन पूजा के संस्कार कैकेयी के नहीं थे। युद्ध, घोड़े की सवारी, जंगल में सफर आदि का उसे शौक था। वह राजपुत्री थी, उसमें क्षत्रिय भाव था।

पुत्रेष्टि यज्ञ से मिला हुआ पायस राजा आधा कौशल्या जी को देते हैं, चौथा सुमित्रा को और आठवाँ कैकेयी को देते हैं। इसका यह मर्म निकल सकता है कि राजा को उत्तराधिकारी के रूप में कौशल्या का पुत्र चाहिए था। कौशल्या पर उनका विश्वास था। कैकेयी के घमण्ड से वह शायद नाराज थे, लेकिन उसको बोलते नहीं थे।

राजा को अपने काबू में रखने का तरीका कैकेयी को मालूम था। राजा जब रात को आते थे वह पूरे कैकेयी के वश में रहते थे। कैकेयी का आसन, विलास, उसका निवास राजा को पसन्द था। राजा कैकेयी के कामपाश से बन्धे हुये थे। इससे ही राम जी को

वाल्मीकि की कैकेयी में स्त्रीत्व है, भोलापन है। अपनी खुशी के लिये उन्होंने अपने बच्चे की इच्छाओं की फिक्र नहीं की। अपनी बुद्धि से वह उबर नहीं सकी। राम के वनवास से उसको कुछ परिताप नहीं हुआ। पति के वियोग से उसको मामूली दुःख हुआ। राजसिंहासन पर उसकी नजर लगी हुई थी।

वनवास हुआ। राजा बूढ़े हो गये थे और अपनी समझ खो बैठे थे।

राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न पैदा हुए और बढ़ने लगे। राम जी अपने स्वभाव से सबके प्रिय बन गये। उनके बर्ताव में कुछ जादू था, सबको अच्छा लगता था। वे कैकेयी को अपनी माँ जैसा प्यार देते थे। रामजी कैकेयी के प्रिय बन गये थे। दासी मन्थरा जब रामजी के राजा बनने का सन्देश लाती है तब कैकेयी मन में खुश हो जाती है। वह मन्थरा को गहनें और भेंट देती है। वह अपनी राजकीयता दिखाती है। जिसका आचार अच्छा है, जो दिमाग में सच्चा है, वह राजा बनने का योग्य है! रामजी का राजा बनना कैकेयी को स्वीकार है। "धार्मिक परिवार में शठता नहीं होती। रामजी धार्मिक हैं।" कैकेयी के हिसाब से वह राजा बनने में सबसे सुयोग्य हैं। कैकेयी समझदार है।

बड़े घराने से आने पर अपनी समझदारी में कुछ खुदीपन भी होती है। अपनी इज्जत, बच्चे का भविष्य, यह सब भी मन में छिपा हुआ रहता है। जब मन्थरा उसको सलाह देती है कि राजा होने के बाद रामजी को स्वभाव में क्रूरता आ सकती है, राजकार्य के लिये वह भरत को देश से निकाल सकते हैं, तब कैकेयी शीघ्र ही भटक जाती है। भरत का कोई कष्ट उसको स्वीकार नहीं। कौशल्या राजमाता का सम्मान लेने के योग्य नहीं, ऐसी भावनाएँ उसके मन में आँधी जैसी आ जाती हैं। भोली विलासप्रिय राजपुत्री कैकेयी अब क्रोधी, क्रूर और कूट बन जाती है। उसको एक ही रास्ता दिखता है कैसे भरत निष्कंटक होकर राजा बनें। मन्थरा तारक बनाती है। कैकेयी का मन कहीं ऊंचा चाहता है।

नारी चरित्र का क्रोध हम शास्त्रों में देखते हैं। वाल्मीकि पहला कवि है जो इसका रूपायन करते हैं। नारी प्रकृति है, जगत का संहार इसमें समाया हुआ है। कैकेयी के क्रोध के आगे कुछ नहीं रुकता। वह रामजी को वल्कल पहनाकर वन को भेजती है। दशरथ के समझ आने तक काम खत्म। दशरथ चिल्लाते हैं, उसको धिक्कारते हैं, गालियाँ देते हैं, कैकेयी चूकती नहीं है। उसका काम हो गया। बिना युद्ध के वह सिंहासन पर कब्जा कर लेती है। राजा शोक से मर जाते हैं तो भी उसकी सोच नहीं बदलती। रानी का दिल पत्थर हो जाता है। राजा के धर्म में सबकी भलाई नहीं हो सकती, लिहाजा पहले अपनी भलाई देखनी चाहिये। यही राजनीति कहती है और कैकेयी इसका अनुसरण करती है। एक बार मन्थरा ने जो राह दिखायी, कैकेयी उसको पहचानकर उस पर आखिरी तक चलती है।

अपने पुत्र को समझ न पाना कैकेयी का सबसे बड़ा दोष है। यद्यपि पुत्र की भलाई के लिये कैकेयी सारे खेल खेलती है, भरत पिता के मृत्यु से मर्माहत होता है। कैकेयी उससे सच्ची बातें छिपाती है। भरत के जोरदार क्रोध से यह मालूम होता है कि माँ बेटे में अच्छा संपर्क पहले से ही नहीं था। माँ के ऊपर भरत का विश्वास नहीं है। वह जानता है कि माँ क्रूर है, स्वार्थी है। उसने जो कुछ भी किया है उसमें कुछ दूसरा मर्म होगा। पिता की मृत्यु से और भ्राता के वनगमन से उसको परेशानी तो जरूर आनी चाहिये, लेकिन माँ के ऊपर उसका क्रोध कुछ और है। वह कैकेयी को कोई भी दुर्गुणात्मक नाम दे देता है। कैकेयी चुप होकर सुनती है। वह शायद जानती है कि राजकर्म में कभी-कभी झगड़ा होता है!

भरत पिताजी की अन्तिम क्रिया घोर अनुताप से समाप्त करते हैं। सबसे कहते हैं कि रामजी के होते हुए वह सिंहासन पर कभी नहीं बैठने वाले। सारी तैयारी करके वह रामजी को वापिस बुलाने को चल पड़ते हैं। सारी अयोध्या नगरी उसके साथ चल चलती है। कौशल्या और सुमित्रा आती हैं। उनके साथ कैकेयी चलती हैं। हो सकता है कि वे अपनी गलती समझ चुकी हैं और दूसरों से मिलजुल के रहने की इच्छा करती हैं। रास्ते में सभी लोग भरद्वाज के आश्रम में ठहरते हैं। फिर सुबह ऋषि के पूछने पर भरत अपनी सभी माँओं का परिचय ऋषि से करवाता है। "यह हैं कौशल्या, धार्मिक राम जी की माँ। यह हैं सुमित्रा, वीर लक्ष्मण की माँ और यह हैं पापिनी कैकेयी, मेरी माँ!" अपने जीवनकाल में कैकेयी को ऐसी कठिन परिस्थितियों में शायद भरत ने कई बार धिक्कारा होगा।

रामजी को पता है कि भरत कैकेयी का अनादर कर सकता है। वह उनको माँ के सम्मान के बारे में समझाते हैं। कोई आचरण में नीचे गिरता है तो उसकी सहायता करने राम जी आगे बढ़ते हैं। रामजी की उदार भावना कैकेयी पर है। वह शायद जानते हैं कि कैकेयी उस समय अपने वश में नहीं थी। यह हो सकता है कि रामजी की वन से लौटने तक कैकेयी की हालत में कोई परिवर्तन नहीं हुआ हो। कैकेयी के लिये भरत जी के कठोर वचन कौशल्या जी को असह्य थे और बचाव के लिये रामजी को काफी विनती करनी पड़ी। भरत जब रामजी की पादुका लेकर नान्दीग्राम में बसते हैं, कैकेयी शायद चुपके-चुपके अपने निवास में अकेली रोती होगी।

वाल्मीकि की कैकेयी में स्त्रीत्व है, भोलापन है। अपनी खुशी के लिये उन्होंने अपने बच्चे की इच्छाओं की फिक्र नहीं की। भरत उसको 'प्रज्ञामानिनी' नाम से ढाँकते हैं। अपनी बुद्धि से वह उबर नहीं सकी। राम के वनवास से उसको कुछ परिताप नहीं हुआ। पति के वियोग से उसको मामूली दुःख हुआ। राजसिंहासन पर उसकी नजर लगी हुई थी। वह सोचती थी कि मनोरथ को पूरा करने में उसका पुत्र सहारा होगा। अपने पुत्र को वह पहले नहीं समझ पाई। काफी अपयश में पड़ने वाली माँ को जीवन में शायद ऐसा अकेलापन काटना पड़ता है। संसार में धन दौलत चाहिये, लेकिन सच्चाई और हमदर्दी उसके आगे रहते हैं। कैकेयी जीवनभर यही सोचती होगी। ■